भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, मंडपम की अनुसूचित जाति उप-योजना गतिविधियों के माध्यम से सफल मछुआरिन उद्यमियाँ

जॉनसन बी.,* विनोद के.,[1] तमिलमणी, जी.,[1] रमेश कुमार, पी.,[1] अनिकुट्टन, के. के.,[1] बवित्रा, आर.,[1] मधु, के.,[2] जयशंकर, जे.[2] ग्रिन्सण जॉर्ज,[2] और गोपालकृष्णन, ए.[2]

**वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र, मंडपम कैंप-623 520, तमिलनाडु, ई-मेल : jsfaith@gmail.com*

[1] भाकृअनुप-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र, मंडपम कैंप-623 520, तमिलनाडु

[2] भाकृअनुप-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची- 682 018, केरल

भा कृ अनु प – सी एम एफ आर आइ का मंडपम क्षेत्रीय केंद्र, 2019 से मछुआरिनों के लाभ के लिए तमिलनाडु के रामनाथपुरम और पुदुकोट्टई जिले में अनुसूचित जाति उप-योजना कार्यक्रम के माध्यम से समुद्री शैवाल पैदावार और समुद्री अलंकारी मछली बीज पालन जैसी विविध आजीविका गतिविधियों को बढ़ावा दे रहा है। इन कार्यक्रमों ने सफल मछुआरिन उद्यमियों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। इस लेख में हम कुछ मछुआरिन उद्यमियों की झलक देख सकते हैं।

श्रीमती एस. जानकी (उम्र: 41), श्री शक्ति की पत्नी है, जो 3-109, वडक्कु कादरकरै, पुदुक्कुडी, तोंडी, रामनाथपुरम जिला, तमिलनाडु में रहती है। वह पारंपरिक मछुआरा समुदाय (कडियार जाति) से संबंधित है, और उनकी आय का मुख्य स्रोत मछली पकड़ना है। मछली पकड़ एवं राजस्व में कमी के कारण, वे अपने परिवार की सहायता के लिए विविध आजीविका विकल्प की तलाश कर रही थी। इस समय, भा कृ अनु प-केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ), मंडपम ने 2019 के दौरान एस सी एस पी कार्यक्रम के माध्यम से पुदुकुडी गाँव, तोंडी में समुद्री शैवाल पैदावार के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण, बीज और तकनीकी मार्गदर्शन सहित संपूर्ण जानकारी प्रदान की हैं। प्रारंभ में अपने पति के सहयोग से, उन्होंने *कप्पाफाइकस अल्वारेज़ी*

समुद्री शैवाल बीजन का दृश्य

संग्रहित समुद्री शैवाल का दृश्य

समुद्री शैवाल के 20 मोनोलाइन इकाइयों (20 बाँस राफ्ट के बराबर) के साथ पैदावार शुरू की। पहले वर्ष में अच्छे राजस्व के कारण, उन्होंने 80 और मोनोलाइन इकाइयों के साथ पैदावार का विस्तार किया। वर्तमान में, वह 100 मोनोलाइन इकाइयों के साथ खेती जारी रखे हुई है और मासिक निवल आय के रूप में लगभग 20,000 रुपये कमा रही हैं। वह बेहतर आजीविका विकल्प प्रदान करने के लिए भारत सरकार के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिससे उन्हें चार बच्चों की शिक्षा का खर्च चलाने में मदद मिलती है। कोविड-19 के पहले राष्ट्रीय लॉकडाउन के दौरान मछली पकड़ने पर प्रतिबंध था और समुद्री शैवाल का पैदावार उनके परिवार के लिए आय का एकमात्र स्रोत था और वह इससे बहुत अच्छी आय अर्जित कर रही थी। समुद्री शैवाल पैदावार की गतिविधि ने उसके आत्मविश्वास को बढ़ाया है और उसे अपने पारिवारिक कार्यों का प्रबंधन करने के लिए सशक्त बनाया है। एक सफल मछुआरिन उद्यमी के रूप में उन्होंने मार्च, 2024 के दौरान दूरदर्शन (डीडी किसान) को एक साक्षात्कार दिया, जिसमें उन्होंने उल्लेख किया है कि समुद्री शैवाल पैदावार मछुआरिनों के लिए एक व्यवहार्य अवसर है।

श्रीमती जोतिप्रिया (उम्र: 27), श्री बालाकृष्णन की पत्नी है जो पुदुक्कुडी, तोंडी, रामनाथपुरम जिला, तमिलनाडु में रहती है। वह पारंपरिक मछुआरा समुदाय (कडियार जाति) से संबंधित है। सभी घरेलू गतिविधियों के बाद उसके पास अधिक समय था, और इसलिए वह कुछ गतिविधि करने में इच्छुक थी। उनकी आवश्यकता को पूरा करने के लिए, भाकृअनुप- सी एम एफ आर आइ, मंडपम ने एन आइ सी आर ए (NICRA) – एस सी एस पी परियोजना के तहत समुद्री शैवाल पैदावार की गतिविधि शुरू करने के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण, सभी आवश्यक इनपुट (बीज सहित) और तकनीकी सलाह प्रदान की है। उन्होंने 2020-2021 के दौरान 20 मोनोलाइन इकाइयों के साथ पैदावार शुरू की। खेती में पहले वर्ष की सफलता के कारण, उन्होंने अपने परिचालन में 20 और मोनोलाइन इकाइयों को जोड़ा। वह वर्तमान में 40 मोनोलाइन इकाइयों के साथ पैदावार कर रही है और हर महीने निवल आय के रूप में लगभग 18,000 रुपये अर्जित कर रही है।

श्रीमती वी. आनंदी (उम्र: 46), श्री वैरामनी (दिवंगत) की पत्नी है, जो 3/138, वडक्कु कादरकरई, पुदुक्कुडी, तोंडी, रामनाथपुरम जिला, तमिलनाडु में रहती है। वह पारंपरिक मछुआरा समुदाय (कडियार जाति) से संबंधित है। वर्ष 2010 के दौरान उनके पति की मृत्यु हुई थी। उनकी चार बेटियाँ हैं और उनकी आय का स्रोत सिलाई था। चूंकि उनकी आय उनके परिवार के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त नहीं थी, इसलिए उन्हें विविध आजीविका विकल्प की आवश्यकता थी। भा कृ अनु प-केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ), मंडपम ने एस सी एस पी कार्यक्रम के माध्यम से 2019 के दौरान पुदुक्कुडी गाँव, तोंडी में समुद्री अलंकारी मछली बीज पालन पर जागरूकता पैदा की। इससे उसके परिवार में रुचि पैदा हुई। उन्होंने भाकृअनुप-सी एम एफ आर आइ, मंडपम में तीन दिनों के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। उनके घर के पिछवाड़े में सभी सामानों के साथ एक शेड (216 वर्ग फीट) स्थापित किया गया। केंद्र द्वारा लगभग 300 आधा इंच आकार की क्लाउन मछलियाँ उपलब्ध कराई गईं। एक से डेढ़ इंच तक के आकार में पहुँचने के लिए मछलियों का पालन 45-60 दिनों में किया गया। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा निरंतर निगरानी और तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया गया। विपणन संपर्क स्थापित किया गया और प्रति मछली का विपणन मूल्य 100/- रुपए से 125/- रुपये तक था। वह हर महीने 15,000 रुपये की निवल आय प्राप्त कर सकती थी। कोविड-19 महामारी के दौरान, यह आय उनके पारिवारिक मामलों को प्रबंधित करने में बहुत सहायक रही।

तीनों मछुआरिनों की सफलता अनोखी हैं। वे पैदावार की गतिविधि जारी रख रही हैं और इससे पैदावार की इकाइयों की संख्या बढ़ा सकती हैं, जो उनके दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत करने की क्षमता को दर्शाता है। वे निर्णय लेने, घरेलू गतिविधियों का प्रबंधन करने और वित्तीय प्रबंधन स्वतंत्र रूप से करने में सक्षम हैं। सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए एस सी एस पी (संस्थान), एन आइ सी आर ए (NICRA) – एस सी एस पी आदि जैसी योजनाओं को लागू करने के लिए भा कृ अनु प और भारत सरकार का प्रमुख स्थान है।

मछली पालन टैंकों में पानी की गुणवत्ता बनाए रखना

विपणन के लिए तैयार क्लाउन मछलियाँ